ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 32-35
ISSN NO.-2347-2944
Vol-12, Issues-XII YEAR 2018 Extra

# प्राचीन यूनान में भूगोल का विकास

**महेन्द्र प्रताप सिंह**

एसोसिएट प्रोफसर – भूगोल विभाग, सकलडीहा पी0जी0 कालेज सकलडीहा, चन्दौली (उ0प्र0) भारत

**Received- 02.05.2018, Revised- 09.05.2018, Accepted - 13.05.2018 E-mail: sagarprinting786@gmail.com**

***सारांश :*** *भौगोलिक ज्ञान के विकास की दृष्टि से प्राचीन यूनानवासियों का योगदान बहुत ही सराहनीय रहा है। यह काल 800 BC से 300 BC तक माना जाता है। जार्ज टैथम एवं हार्टशोन जैसे भूगोलवेत्ता हम्वोल्ट एवं रिटर के काल को चिर सम्मत काल (Classical Peria) कहते है। भौगोलिक तथ्य किस प्रकार ज्ञान प्राप्त करने हेतु प्रेरित करते रहे है यूनान इसका उत्कृष्ण उदाहरण है। भूमध्य सागर के पूर्वी तटवर्ती भाग से लेकर काला सागर तथा भूमध्यसागरीय अफ्रीकी तटवर्ती क्षेत्र में यूनानियों का प्रभाव था। माइलेटस एक प्रमुख नगर था जहां कई विद्वान रहते थे जो व्यापारियों से प्राप्त सूचनाओं का परस्पर आदान–प्रदान करते हुए उन पर गंभीर चर्चा करते थे। सम्पूर्ण क्षेत्र भौगोलिक विविधताओं से युक्त होने के कारण चिन्तन हेतु प्रेरक तत्व की भांति काम करते थे। विषम उच्चावच पर्वत एवं घाटियाँ, तीव्रगामी नदियाँ कटा फटा तट जल संधि अन्तरीप, चूना पत्थर से युक्त क्षेत्र एवं इसमें विलुप्त नदियाँ एवं उनमें भूमिगत मार्ग, प्रायः आने–वाले भूकम्प, ज्वालामुखी आदि मिलकर एक ऐसे विस्मयकारी परिदृश्य की रचना करते थे जो यहां के निवासियों बुद्धिजीवियों को इन तथ्यों पर चिंतन करने के लिए बाध्य करता रहा। यही कारण है कि यूनानवासी स्वभाव से चिंतनशील प्रकृति के हो गये जो भौगोलिक ज्ञान को प्राप्त करने में सहायक बन रहा है कि विशिष्ट भौगोलिक परिवेश ही यूनानियों के भौगोलिक ज्ञान के विकास में सहायक बनी। यहां के प्रमुख विद्वान होमर, थेल्स, एनाक्सिमेण्डर, हेरोडोटस, हिकेटियस है।*

***कुंजी शब्द – उत्कृष्ण, अन्तरीय, विलुप्त, विस्मयकारी, परिवेश, चिन्तनशील, उच्चावच, प्रेरकतत्व, तीव्रगामी।***

**होमर**–यूनानी भूगोलवेत्ता होमर को भूगोल को जनक की संज्ञा देते है। यह मूलतः कवि थे। इन्होंने ओडिसी एवं इलियड नामक ग्रन्थों की रचना की है। जो काव्य रूप में है। इसमें ट्राजन युद्ध का वर्णन है जिसके नायक ओडेसस के वापसी यात्रा वृतांत बहुत ही रोचक ढ़ंग से कहा गया है। चूंकि यात्रा बीस वर्षों में पूरी हुई अतः यात्रा में पड़ने वाले सभी क्षेत्रों स्थानों के भौगोलिक तथ्यों का रोचक वर्णन किया गया है। अतः इसकी तुलना कालिदास के मेघदूत से की जा सकती है। कुछ विद्वानों ने यात्रा में पड़ने वाले स्थलों को पहचानने का प्रयास भी किया है। होमर ने निरन्तर प्रकाश एवं निरन्तर अन्धकार में रहने वाले दोनों क्षेत्रों का वर्णन किया है। निष्चित ही उन्हें उत्तरी ध्रुव के पास के दोनों में निरन्तर दिन एवं निरन्तर रात रहने का ज्ञान था। इन्होंने पृथ्वी को सागर सरिता से घिरी हुई चपटी बताया है। इन्होंने उत्तर दिशा से चलने वाली पवन को बोरियास (Boreuas) दक्षिण दिशा से चलने वाली पवन को नाट्स (Notus), पूर्वी दिशा से चलने वाली पवन को यूरस (Euras) तथा पश्चिम दिशा से चलने वाली पवन को जेफायरस (Zephyrus) कहा है।

थेल्स–640 BC -546BC

यह फोनेशियन माता–पिता के सन्तान थे। इन्हें आयोनियन दर्शन का जनक भी कहा जाता है। यह माइलेटस नगर के निवासी थे। ये अंकगणित, रेखागणित व नक्षत्र विद्या के ज्ञाता थे। इनके द्वारा रचित कोई भी पुस्तक उपलब्ध नहीं है। अतः इनमें भौगोलिक ज्ञान का अनुमान अन्य विद्वानों के विवरणों से प्राप्त होता है। इन्होंने जल को ब्रहमाण्ड का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व माना है। पृथ्वी जल पर तैर रही है, इनकी ऐसी मान्यता थी। इन्हें पृथ्वी एवं चन्द्रमा की गतियों का भी ज्ञान था। इनके द्वारा सूर्य ग्रहण की भविष्यवाणी सही सिद्ध हुई थी। इन्हें नील नदी के सन्दर्भ में पर्याप्त जानकारी थी। इन्होंने नील को दो नदिया ब्लू नील एवं वाइट नील से मिलकर बना हुआ बताया है। इन्होंने नील नदी की बाढ़ एवं उसके द्वारा निर्मित डेल्टा का भी ज्ञान था।

एनाक्सिमेण्डर–(611BC-645BC) g थेल्स के शिष्य थे तथा माइलेट्स नगर में रहते थे। थेल्स के समान इन्हें भी गणितीय भूगोल के संस्थापक होने का श्रेय प्राप्त है। इन्होंने बेबीलोन में प्रयुक्त होने वाले नोमोन घड़ी का प्रचलन यूनान में किया था। यह एक घूप घड़ी (Sun Dial) होती है। चौरस सतह पर एक छड़ी (Stick) खड़ी करके उसकी परछाई से सूर्य की स्थित का अनुमान लगाया जाता है। वर्ष में जब सूर्य कर्क रेखा पर होता है तो छड़ी की परछाई सबसे छोटी है तथा जब सूर्य मकर रेखा पर होता है तो छड़ी की परछाई सब बड़ी होती है। यह सबसे छोटी परछाई उत्तर–दक्षिण मध्याह्न को निश्चित करती है। इन्होंने ज्ञात विश्व का मानचित्र बनाया था। जिसमें यूनान

अनुरूपी लेखक

को विश्व के मध्य में प्रदर्शित किया था। सूर्य के उदय और अस्त होने की सटीक कारणों का ज्ञान इन्हें नहीं था। इनके अनुसार पर्वत की छाया के कारण दिन और रात होते हैं जो आगे चलकर गलत सिद्ध हुआ।

**हिकेटियस–** इनका जन्म 500 **BC** के आस–पास हुआ था। ये भी माइलेट्स नगर में रहते थे। इन्होंने आस–पास के क्षेत्रों का न केवल भ्रमण किया था बल्कि मानचित्र भी बनाया था और पुस्तक भी लिखा था। इनकी पुस्तक पीरियोडस (पृथ्वी का विवरण) है। जिसमें दो खण्ड हैं। एक खण्ड यूरोप पर और दूसरा अफ्रीका एवं एशिया पर आधारित है। इस प्रकार ज्ञात विश्व को दो भागों में बांटकर प्रादेशिक भूगोल की शुरूआत की। यूरोप में काला सागर तक के क्षेत्रों का वर्णन है। इसने डेन्यूब, नीपर तथा डोननदी तक के क्षेत्रों का वर्णन किया है। अफ्रीका महाद्वीप के मध्य उत्तरी भू–भाग (लीबिया) तथा एशिया के दजला–फरात तथा सिन्धु नदी का भी उल्लेख मिलता है। इस प्रकार इसने ज्ञात विश्व का मानचित्र बनाकर और पुस्तक लिखकर भूगोल का स्पष्ट श्री गणेश किया। इसीलिए टोजर ने इन्हें भूगोल का जनक कहा है।

**हेरोडोटस–**(485BC -425BC) ये मुख्य रूप से इतिहासवेत्ता थे फिर भी इनके द्वारा प्रस्तुत भौगोलिक तथ्यों बड़े ही महत्व के हैं। इन्होंने ऐतिहासिक घटनाओं एवं भौगोलिक तथ्यों को एक साथ रखकर समझने का प्रयास किया। इनके अनुसार भूगोल ऐतिहासिक घटनाओं हेतु मंच प्रदान करता है। अतः ऐतिहासिक घटनाओं का भौगोलिक महत्व हो जाता है। इसलिए भौगोलिक तथ्यों की व्याख्या भी ऐतिहासिक सन्दर्भो में की जानी चाहिए। अतः कहा जा सकता है कि यह वातावरण–निश्चयवाद की शुरूआत थी।

हेरोडोटस महान यात्री भी था। उनके उस समय के अधिकांश ज्ञात क्षेत्रों का भ्रमण किया था। भूमध्यसागर के चतुर्दिक पड़ने वाले दोनों, कैस्पियन सागरीय तटों की, लिविया या अफ्रीका आदि देशों का न केवल यात्रा किया बल्कि मानचित्र भी बनवाया। यात्रा में पड़ने वाले क्षेत्रों के वर्णन के साथ सामाजिक तथ्यों रहन–सहन, धार्मिक स्वरूप आदि का भी वर्णन किया है। यूरोप की अपेक्षा अफ्रीका का विवरण अधिक सही है।

हेरोडोटस द्वारा वर्णित कुछ भौगोलिक तथ्य उल्लेखनीय है–

1. हेरोडोटस ने लाल सागर को एशिया एवं अफ्रीका की सीमा बताया है जिसे वर्तमान में भी स्वीकार किया जाता है।

2. इनके द्वारा दिये गये नील नदी सम्बन्धी तथ्य भी सटीक है। इसने नील नदी के डेल्टा का निर्माण नदी द्वारा लाये गये मलवे के जमने से हुआ बताया है, जो कि सही है। उसने डेल्टा को कृषि योग्य बताया है। यद्यपि नील नदी के उद्‌गम सम्बन्धी विचार सही नहीं थे। इसने नील नदी का उद्‌गम लीविया के पश्चिम में बताया था।

3. इसने कैस्पियन सागर को आन्तरिक सागर (बन्द सागर) माना है जो सही है।

4. हेरोडोटस के सूर्य के आरम्भ एवं दक्षिणापन होने सम्बन्धी विचार सही नहीं थे। इनका मत था कि शीत–ऋतु में सूर्य पवनों द्वारा दक्षिण की ओर खींच लिया जाता है।

5. हेरोडोटस ने यात्रा को पड़ने वाले क्षेत्रों में निवास करने वाली विभिन्न जातियों का विवरण दिया है। इस प्रकार वह एक मानव विज्ञानी भी था। उसने इन जातियों की विशेषताओं का अच्छा वर्णन किया गया है।

6. इसने विश्व को दो भागों में विभाजित किया था। उत्तर में यूरोप तथा दक्षिण में एशिया एवं अफ्रीका बताया है।

7. हेरोडोटस ने विश्व मानचित्र भी बनाया था। जिसमें लालसागर, नील का मुहाना सही दर्शाया गया था, किन्तु फारस की खाड़ी एवं भारत का विस्तार सही नहीं था।

8. हेरोडोटस भी विश्व के चतुर्दिक सागर होने की बात स्वीकार की है।

प्लेटो–(428–348ई0पू0)

यह मूलतः दार्शनिक थे। निगमनात्मक अर्थात् तर्क द्वारा ज्ञान प्राप्त करने में विश्वास करते थे। इन्होंने तर्क के आधार पर सिद्ध किया कि पृथ्वी अण्डाकार है जो कि पूर्ण ईकाई है। इनके मतानुसार ईश्वर ने पृथ्वी की रचना मनुष्यों के उपयोग के लिए की है। किन्तु मनुष्य अपनी उद्‌देश्य की पूर्ति के लिए इसे विकृत कर रहा है। उदाहरण स्वरूप ये यूनान के अटिका प्रदेश को लेते है जो कभी हरा–भरा तथा मनुष्यों एवं पशुओं के निवास से पूर्ण था किन्तु मनुष्य वहां के संसाधनों को अति उपयोग करके उसके रूवरूप को विकृत कर दिया है। इस प्रकार ये प्राकृतिक तत्वों के मध्य संतुलन के पक्ष में थे तथा कहा जा सकता है कि पर्यावरण पर मानव क्रिया–कलापों के पड़ने वाले प्रभाव की ओर इंगित किया है।

अरस्तू–(ई0पू0 384–322)

ये चिकित्सक पिता के सन्तान थे । अरस्तू अपने गुरू प्लेटों से दर्शन की शिक्षा प्राप्त की तथा आगे चलकर महान दार्शनिक बने । यह न केवल दर्शन पर अपने विचार व्यक्त किए बल्कि भूगोल, जलवायु विज्ञान, जैसे विषयों पर भी सप्रमाण मत प्रतिपादित किया । यह तर्क के आधारपर किसी निष्कर्ष पर पहुँचना नहीं चाहते थे बल्कि प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर (आगमनात्मक अध्ययन पद्धति) ज्ञान

प्राप्त करना चाहते थे। ये उपलब्ध सूचनाओं के आधार पर सिद्धान्त का परीक्षण करते थे तब कहीं जाकर किसी निष्कर्ष पर पहुँचते थे। इस प्रकार ये विशिष्ट से सामान्य का (From Particular to the general) निष्कर्ष निकालने के पक्ष में थे।

यद्यपि इन्होंने पृथक रूप से भूगोल की किसी पुस्तक की रचना नहीं की है किन्तु ब्रहमाण्ड वर्णन नामक पुस्तक में जिन भौगोलिक तथ्यों का उल्लेख किया है वे इनके भौगोलिक ज्ञान के परिचायक तो है ही साथ ठोस प्रमाण के आधार पर तथ्यों को प्रस्तुत करने की क्षमता को भी प्रदर्शित करते हैं । इनमें भौगोलिक निम्न है–

1. अरस्तू ने भी पृथ्वी का गोल स्वरूप स्वीकार करते हुए इसे ब्रहमाण्ड के मध्य में स्थित माना। पृथ्वी के गोल होने के पक्ष में यह निम्न प्रमाण प्रस्तुत करते हैं–

अ–चन्द्र ग्रहण के समय चन्द्रमा पर पृथ्वी की छाया गोल पड़ती है। यह पृथ्वी के गोल होने का सटीक प्रमाण है।

ब–ये अपने इस विश्वास के कारण की अन्तरिक्ष में सभी ग्रह नक्षत्र गोल है अतः पृथ्वी को भी गोल मानते थे।

स–यात्रा के समय नक्षत्रों की स्थिति बदलती जाती है। यह पृथ्वी के गोल होने से ही संभव है ।

द–चूंकि अन्तरिक्ष के सभी पिण्ड गुरूत्वाकर्षण शक्ति के कारण परस्पर सम्बन्धित हैं अतः पृथ्वी को भी गोल होना चाहिए ।

2. अरस्तू के अनुसार पृथ्वी पाँच मूल–भूत तत्वों मिट्टी, जल, वायु, आकाश एवं वायु से मिलकर बनी है। इस प्रकार वह पंच महाभूत (क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर) की कल्पना की थी। जैसा कि हमारें वेदों में भी वर्णित है। आकाश के अन्य पिण्ड भी इन्हीं पंच महाभूतों से बने हैं। साथ ही पृथ्वी की परिधि चार लाख स्टेडिया स्वीकार की।

3. इन्होंने विभिन्न पर्वतों एवं नदियों का भी वर्णन किया। इनकी रचनाओं में काकेशस, पिरेनीज, आरकीनियम, राइपियन पर्वतो का वर्णन मिलता है। इसने यार्नासस को सबसे बड़ा पर्वत बताया है इसी से सिन्धु नदी का उद्गम बताया है। ऐसा प्रतीत होता है कि उसने हिमालय को यार्नासस कहा है। उसके पर्वत एवं नदियों के वर्णन अधूरे हैं।

4. इन्होंने वर्षा से नदियों में बाढ आने व मिट्टी के जमाव का भी उल्लेख किया है तथा बाढ़ का धरातल पर पड़ने वाले प्रभावों से परिचित था।

5. अरस्तू ने सर्वप्रथम ताप की भिन्नता के आधार पर पृथ्वी को जलवायु कटिबन्धों में विभाजित किया–1–उश्ण कटिबन्ध 2–शीतोष्ण कटिवन्ध 3–शीत कटिबन्ध। इनके पृथ्वी को इस प्रकार विभाजित करने से उनकी पृथ्वी के गोल होने की मान्यता की पुष्टि होती है। इन्होंने दोनों ध्रुवों पर शीत कटिबन्ध, उष्ण कटिबन्ध का विस्तार विषुवत रेखा पर तथा दोनों के मध्य शीतोष्ण कटिबन्ध को स्थित बताया। इनके अनुसार ध्रुवों के पास के दोनों शीत कटिबनध में तापमान कम होने के कारण मानव निवास संभव नहीं है। अतः इसे मानव वसाव के अयोग्य ठहराया है। विषुवत रेखा पर स्थित उष्ण कटिबन्ध की अत्यधिक ताप के कारण मानव वसाव हेतु उपयुक्त नहीं है। अतः दोनों के मध्य स्थित शीतोष्ण कटिबन्ध ही मानव बसाव हेतु उपयुक्त है। इस प्रकार विषुवत रेखा से उत्तर–दक्षिण बढ़ती दूरी के अनुसार तापमान में परिर्वतनशीलता मिलती है जो क्षेत्रों के निवास्यता को निश्चित करता है। इस प्रकार ये जलवायु के तत्वों में तापमान को सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानते थे।

सिकन्दर की खोज यात्रा– यह महान दार्शनिक अरस्तू का शिष्य था। इसका जन्म 356ई0 पू0 में हुआ था। अरस्तू सिद्धान्त की परख अवलोकन द्वारा करने के पक्षधर थे। सिकन्दर पर इस दृष्टिकोण का गहरा प्रभाव पड़ा। अतः उसके अज्ञात क्षेत्रों के बारे मे जानकारी प्राप्त करने के लिए पूर्व की ओर सुसज्जित सेना के साथ प्रस्थान किया। किसी यूरोपवासी द्वारा यह एशिया की प्रथम साहसिक यात्रा थी। सिकन्दर विश्व का मात्र महान विजेता ही नहीं था, उसका अपना विजय ही मूल प्रयोजन नहीं था। उसका मुख्य प्रयोजन एशिया को यूरोप में विलय कर देना था और इसी उद्देश्य से उसने उपनिवेश एवं सैनिक बस्तियों की स्थापना की। उसने भारत में सिन्धु नदी तक की यात्रा की थी। वह 19वर्ष की अवस्था में मकदूनिया का शासक बना और तत्काल ही डेन्यून नदी के क्षेत्र में रहने वाली बर्बर जातियों को परास्त किया। तत्पश्चात् टर्की से होकर डेरीयस की सेना को ईसस पर पराजित किया। इसी प्रकार सीरिया तथा फोनेशिया (जिसे आज लेबनान कहते है) के तट पर पहुंचने के बाद दजला नदी को पार करके अरबेला की विजय प्राप्त की। इसके पश्चात् इकबताना, सूसा और पर्सपोलिस होकर आक्सास की घाटी पहुँचा। फारस साम्राज्य पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् 327ई0पू0 में हिन्दूकुश को पार करके सिन्धु घाटी की ओर सिकन्दर व्यास और सतलज के संगम तक आया था। इस प्रकार यह वर्तमान भारत के पंजाब प्रान्त तक पहुँच गया था। सिन्धु को पार करते ही उसका मुकाबला पोरस से हुआ जिसमें पोरस को पराजित होना पड़ा जिसका मुख्य कारण हाथियों की सहायता से युद्ध लड़ना था। यहां से वह अब पूरब दिशा में और भी आगे बढ़ना चाहता था किन्तु सैनिक विद्रोह के कारण वापस लौटना पड़ा। यहां से वह वेवीलोनिया गया। जिसे

सात वर्ष पहले छोड़ आया था। इसके अतिरिक्त वह दक्षिण में मिश्र तक की यात्रा की तथा सिकन्दरिया नगर की स्थापना की जो आगे चलकर प्रमुख शैक्षणिक केन्द्र बना। इसने नील नदी में भी यात्रा की। भारत से लौटते समय वह सेना की एक टुकड़ी को सिन्धु नदी के मुहाने से समुद्री यात्रा द्वारा वापस भेजा और स्वयं उत्तरवर्ती मार्ग का अनुसरण करते हुए वेवीलोन पहुंचा जहां 323 ई0 पू0 में उसकी मृत्यु हो गई।

सिकन्दर की इस महान साहसिक यात्रा का राजनैतिक महत्व तो है ही साथ ही इसका भौगोलिक महत्व भी कम नहीं है। इस यात्रा का संक्षेप में भौगोलिक महत्व यह है कि यूरोपवासियों को भारत सहित एशिया के बारे में प्रमाणिक जानकारी उपलब्ध हुई जो अब तक मात्र किवदंतियों के रूप में था। यह सागर मरूस्थल पर्वतीय क्षेत्रों, दरों, मैदान नदी व घाटियों से होकर गुजरा और जिस प्रदेश में पहुँचा वहां का विस्तृत विवरण तैयार करवा कर बेवीलोन में स्वयं द्वारा स्थापित संग्रहालय में एकत्र करवाता था। इस कार्य के लिए वह सेना के साथ–साथ विद्वानों का एक दल भी साथ लेकर चलता था जिसका मुख्य कार्य विभिन्न स्थलों क्षेत्रों का विवरण तैयार करता था। सिकन्दर के विजय अभियान के द्वारा ही टर्की, मिश्र, नीलनदी, दजला–फरात नदियां, सीर दरिया, आमूदरिया, ईरान, अफगानिस्तान, पंजाब की पंचनदियों, सिन्धु, सतलज, रावी, चिनाव, झेलम नदियों के बारे में सटीक भौगोलिक जानकारी यूरोपवासियों को मिली। क्षेत्रों के धरातल, जलवायु, निवासी, उद्यान, कृषि और सांस्कृतिक धार्मिक विशिष्टाओं का भी ज्ञान यूरोपवासियों को मिली। इस प्रकार सिकन्दर के सशस्त्र खोज अभियान से यूरोपवासियों को पूरब विशेष कर भारत के बारे में पर्याप्त जानकारी मिली जिसका दूरगामी राजनीतिक प्रभाव पड़ा।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. विद्या बन्धु त्रिपाठी एवं रामनरेश विरले, भौगोलिक चिंतन का विकास, पृ0 सं0–322
2. डॉ0 वी0 पी0 राव एवं डॉ0 एस0 के दीक्षित, मानव भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर, पृ0 सं0–365
3. डॉ0 चतुर्भुज मामोरिया, भूगोल, साहित्य भवन पब्लिकेशन, पृ0 सं0–46

*****